CHETANA
International Journal of Education (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)
Impact Factor
SJIF 2025-8.445

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

भारतीय संदर्भ में उच्च शिक्षा में सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण

रश्मि कुमारी राजौरा
शोधार्थी
रेनु यादव
प्रोफेसर
अध्यापक शिक्षा विभाग,
हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़-123031
Email- rashmikumarirajora6@gmail.com, Mobile- 08595344293

First draft received: 05.11.2025, Reviewed: 88.11.2025
Final proof received: 09.11.2025, Accepted: 10.11.2025

सारांश

सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण (सीआरटी) एक ऐसा शैक्षिक दृष्टिकोण है जो सीखने की प्रक्रिया में शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों को शामिल करने के महत्व पर बल देता है। यह लेख सीआरटी के सैद्धांतिक ढाँचे, उसके घटकों और भारत के उच्च शिक्षा क्षेत्र में इसके प्रभावों का विश्लेषण करता है। विशेष रूप से, यह लेख सीआरटी को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा (एनसीएफ़) 2022, और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की "नवाचारी शैक्षिक दृष्टिकोण और मूल्यांकन सुधारों के लिए दिशा-निर्देश" (2022) के साथ संरेखित करने पर केंद्रित है। इस लेख में भारतीय कक्षाओं में सीआरटी लागू करने के अवसरों और चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। इसके माध्यम से यह बताया गया है कि कैसे सीआरटी भारत के उच्च शिक्षा क्षेत्र में समावेशिता, शैक्षणिक सफलता और सामाजिक न्याय को बढ़ावा दे सकता है। अंत में भारतीय संदर्भ में उच्च शिक्षा में सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षा (सीआरटी) लागू करने के महत्वपूर्ण कदमों को पिरामिड द्वारा दर्शाया गया है।

मुख्य शब्द: *सीआरटी, शैक्षिक दृष्टिकोण, युवा सहभागिता राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नवाचारी शैक्षिक दृष्टिकोण, उच्च शिक्षा आदि.*

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में एक प्रगतिशील परिवर्तन को दर्शाती है, जो 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप है और साथ ही देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में गहराई से निहित है। यह नीति समावेशिता, समानता और शिक्षार्थियों के समग्र विकास पर बल देती है, जिससे भारत की विविध सांस्कृतिक, भाषाई और सामाजिक पृष्ठभूमि को सम्मान और बढ़ावा मिलता है।भारत विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं, धर्मों और परंपराओं का संगम है, जो इसे एक रंगीन और जीवंत देश बनाता है। यह विविधता इसकी सबसे बड़ी ताकतों में से एक है (चौधरी और गोपाल, 2024) । प्राचीन काल से ही भारत में बहु-विषयक दृष्टिकोण की समृद्ध परंपरा रही है, जिसका उदाहरण नालंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन शिक्षण संस्थानों में मिलता है। प्राचीन भारत के ये उच्च शिक्षण केंद्र प्रत्येक ज्ञान शाखा जैसे गायन, चित्रकला, रसायन, गणित; व्यावसायिक क्षेत्र जैसे बढ़ईगिरी, वस्त्र निर्माण और पेशेवर क्षेत्र जैसे चिकित्सा एवं अभियांत्रिकी के साथ-साथ संचार, चर्चा और वाद-विवाद जैसी सॉफ्ट स्किल्स की शिक्षा के लिए प्रसिद्ध थे (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020; पृष्ठ 57- 58, अनुभाग 11.1, 11.2)। सदियों के दौरान व्यापक शिक्षा के अवसर संकुचित होते गए और हाल के वर्षों में विशेष विषयों पर केंद्रित शिक्षा प्रणाली विकसित हुई, जिससे एकल-धारा शिक्षण संस्थानों की वृद्धि हुई। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) बहु-विषयक शिक्षा प्रदान करने के लिए कई नीतिगत दिशानिर्देश सुझाती है (उच्च शिक्षण संस्थानों को बहु-विषयक संस्थानों में रूपांतरित करने के लिए दिशा-निर्देश, 2022; एनईपी 2020, पृष्ठ 57- 58)।

वैश्वीकरण, प्रवासन, और समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने वाली नीतियों के कारण विश्व भर के उच्च शिक्षा संस्थानों में सांस्कृतिक विविधता बढ़ रही है (बनक्स & बनक्स, 2019)। इस संदर्भ में पारंपरिक शिक्षण विधियाँ अक्सर विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से आने वाले शिक्षार्थियों की जरूरतों को पूरा करने में असफल रहती हैं (गे, 2018)। इस अंतर को पाटने के लिए सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण (सीआरटी) एक प्रभावी

शिक्षण पद्धति के रूप में उभरा है। यह पद्धति शिक्षार्थियों के सांस्कृतिक ज्ञान, अनुभवों और दृष्टिकोणों को सीखने की प्रक्रिया में शामिल करती है ताकि उनकी शैक्षणिक सफलता, सांस्कृतिक क्षमता और आलोचनात्मक चेतना को बढ़ावा दिया जा सके (बिलिंगस, 1995; गे, 2010)। सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण (CRT) शब्द भारत में व्यापक एवं प्रत्यक्ष रूप से उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन इसके सिद्धांत समावेशी शिक्षा, अनुभवात्मक शिक्षण और शिक्षण विधियों में स्थानीय परंपराओं के एकीकरण में परिलक्षित होते हैं *(टैगोर, 1921; कुमार, 2019; शर्मा और गुप्ता, 2018)*।

सीआरटी को परिभाषित करते हुए गे ने कहा है कि यह एक ऐसी शिक्षण पद्धति है जो "विभिन्न जातीय पृष्ठभूमियों से आने वाले शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक विशेषताओं, अनुभवों और दृष्टिकोणों का उपयोग उन्हें अधिक प्रभावी ढंग से शिक्षित करने के लिए करती है" (गे, 2002, पृष्ठ 106)। शिक्षार्थी तब सबसे अच्छा सीखते हैं जब उनकी सांस्कृतिक पहचान को मान्यता दी जाती है, उसका सम्मान किया जाता है, और उसे कक्षा की प्रथाओं में शामिल किया जाता है (बनक्स , 2016)। यह दृष्टिकोण वंचित समुदायों से आने वाले शिक्षार्थियों के प्रति नकारात्मक सोच को चुनौती देता है और शिक्षार्थियों के सांस्कृतिक ज्ञान को सीखने के लिए एक संपत्ति के रूप में देखता है (मॉल और अन्य, 1992; पेरिस , 2012)।

सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र एक रूपांतरकारी दृष्टिकोण है; जब इस दृष्टिकोण से शिक्षण किया जाता है, तो छात्र बेहतर व्यक्ति बनते हैं और अधिक सफल शिक्षार्थी होते हैं (राजगोपाल, 2011)। यह रूपांतरकारी दृष्टिकोण व्यक्तिगत आत्मविश्वास, शैक्षणिक दक्षता, कार्य करने की इच्छा, और सीखने, अन्वेषण करने व ज्ञान के साथ बढ़ने का साहस उत्पन्न करता है। सीआरटी की अवधारणा केवल सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षार्थियों को उनके जीवन, अनुभवों और सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों से जुड़ी हुई शिक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करती है (हममोनद, 2015, p. 23)। इसका उद्देश्य एक ऐसा समानतापूर्ण शिक्षण वातावरण बनाना है जहाँ वंचित समुदायों से आने वाले शिक्षार्थी, शैक्षणिक और सामाजिक रूप से सफल होने के लिए सशक्त महसूस करें (सलीटेर , 2011; हॉवर्ड , 2019)।

भारत के संदर्भ में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 ने सीआरटी की महत्ता को रेखांकित किया है। यह नीति समावेशी, न्यायसंगत और शिक्षार्थी -केंद्रित शिक्षण वातावरण बनाने पर बल देती है, जो शिक्षार्थियों की विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों का सम्मान करता है । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (2022) के "नवाचारी शैक्षिक दृष्टिकोण और मूल्यांकन सुधारों के लिए दिशा-निर्देश" सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण प्रथाओं की वकालत करते हैं ताकि उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षा की गुणवत्ता और प्रासंगिकता को बेहतर बनाया जा सके। यह दस्तावेज़ छात्रों की विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धतियों और मूल्यांकन में सुधार का सुझाव देता है (यूजीसी, 2022, पृष्ठ 15-17)। सांस्कृतिक उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र से सम्बंधित अधिक शोध अध्यापकों के परिप्रेक्ष्य *(पेड्रोसो, सासाना और वेलेंसिया, 2023; मुनिज़ जे., 2019; बैसी, 2016 ; पाशा, 2012; विलेगास और लुकास, 2007)* एवं माध्यमिक शिक्षा पर आधारित हैं *(क्लार्क, 2023; होयट, हंट और लवेट, 2022; सिंह, 2022; गीयरहार्ट, 2019)*।

उच्च शिक्षा में सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण का सैद्धांतिक ढांचा

उच्च शिक्षा में सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण (सीआरटी) का सैद्धांतिक ढांचा बहुआयामी है, जो विभिन्न शैक्षिक सिद्धांतों से प्रेरित है। ये सिद्धांत सांस्कृतिक प्रासंगिकता, आलोचनात्मक चेतना, सामाजिक अंतःक्रिया, और सीखने की प्रक्रिया में सांस्कृतिक ज्ञान के महत्व पर बल देते हैं। इन सिद्धांतों का एकीकरण यह समझने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है कि उच्च शिक्षा में सीआरटी को कैसे लागू किया जा सकता है ताकि विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों के लिए समावेशिता, सहभागिता, और शैक्षणिक सफलता को बढ़ावा दिया जा सके। इन स्थापित शैक्षिक सिद्धांतों में सीआरटी को आधार बनाकर, यह अभ्यास असमानताओं को दूर करने और ऐसा वातावरण बनाने का एक प्रभावी उपकरण बन जाता है जो सभी शिक्षार्थियों, विशेष रूप से ऐतिहासिक रूप से हाशिए समूहों के लिए सीखने को बढ़ावा देता है। बॉर्डीयू (1986) के अनुसार, शिक्षार्थियों का सांस्कृतिक ज्ञान और अनुभव जिन्हें अक्सर "सांस्कृतिक पूंजी" कहा जाता है, उनकी सीखने की प्रक्रियाओं में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सीआरटी ढांचे के द्वारा शिक्षकों को इस सांस्कृतिक पूंजी को पहचानने और इसका उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि शैक्षिक सफलता को बढ़ावा दिया जा सके। सीआरटी ऐसे शैक्षिक वातावरण की मांग करता है जहां विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों को न केवल स्वीकार किया जाए बल्कि शिक्षण प्रथाओं में भी एकीकृत किया जाए ताकि सभी शिक्षार्थियों के सीखने के परिणामों को बेहतर बनाया जा सके। निम्नलिखित अनुभाग में सीआरटी के प्रमुख सैद्धांतिक आधारों का विस्तार से उल्लेख किया गया है, जिनमें शामिल हैं: सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षाशास्त्र (Culturally Relevant Pedagogy), आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र (Critical Pedagogy), वायगोत्स्की का सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत, ज्ञान के स्रोतों का सिद्धांत (Funds of Knowledge Theory), और सांस्कृतिक रूप से पोषित शिक्षण (Culturally Sustaining Pedagogy) ये सिद्धांत उच्च शिक्षा में सीआरटी को समझने के लिए एक मजबूत ढांचा प्रदान करते हैं।

सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षाशास्त्र

सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षाशास्त्र (Culturally Relevant Pedagogy - CRP) की अवधारणा 1990 के दशक की शुरुआत में ग्लोरिया लैडसन-बिलिंग्स द्वारा विकसित की गई थी और यह सीआरटी का एक महत्वपूर्ण आधार है। लैडसन-बिलिंग्स (1994) ने सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षाशास्त्र को यह समर्थन देने के लिए प्रस्तुत किया कि शिक्षण अभ्यास केवल शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पहचान को स्वीकार न करे बल्कि उनके सांस्कृतिक ज्ञान और अनुभवों को भी सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल करे। सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षाशास्त्र के तीन मुख्य सिद्धांत हैं:

1. **शैक्षणिक सफलता (Academic Success)**: सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षाशास्त्र का पहला लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी शिक्षार्थी , विशेष रूप से वे जो हाशिए पर रहे सांस्कृतिक समूहों से आते हैं, शैक्षणिक सफलता प्राप्त करें। इसके लिए शिक्षकों को शिक्षार्थियों की जरूरतों और सांस्कृतिक संदर्भों के आधार पर उच्च अपेक्षाएं, स्कैफोल्डिंग (सहायक संरचना), और भिन्न शिक्षण पद्धतियों को अपनाना चाहिए।

2. **सांस्कृतिक क्षमता (Cultural Competence)**: शिक्षार्थियों को विविध समाज में सफल होने के लिए आवश्यक सांस्कृतिक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। इसमें विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं, ऐतिहासिक अनुभवों, और दृष्टिकोणों के बारे में सीखना शामिल है।
3. **आलोचनात्मक चेतना (Critical Consciousness)**: सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षाशास्त्र शिक्षार्थियों को सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक मुद्दों के साथ आलोचनात्मक रूप से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह उन्हें सामाजिक असमानताओं को चुनौती देने और सामाजिक न्याय के लिए काम करने के लिए सशक्त बनाता है।

आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र

पाउलो फ्रेरे द्वारा 1970 के दशक में विकसित आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र (Critical Pedagogy) सीआरटी का एक अन्य महत्वपूर्ण सैद्धांतिक आधार है। फ्रेरे के कार्य इस बात पर बल देते हैं कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन और मुक्ति के लिए एक उपकरण होनी चाहिए, विशेष रूप से उन समूहों के लिए जो हाशिए पर रहे हैं। आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र मुख्य रूप से निम्नलिखित तत्वों पर आधारित है:

1. **संवाद और शिक्षार्थी की आवाज़ (Dialogue and Student Voice)**: फ्रेरे ने कक्षा में संवाद के महत्व पर बल दिया, जहां शिक्षार्थियों के अनुभवों, प्रश्नों, और दृष्टिकोणों को मान्यता दी जाती है और उन्हें सीखने की प्रक्रिया में शामिल किया जाता है। सीआरटी इस सिद्धांत का उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए करता है कि विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले शिक्षार्थियों को बोलने, साझा करने, और पाठ्यक्रम के साथ सार्थक रूप से जुड़ने का अवसर मिले।

2. **आलोचनात्मक चेतना (Conscientization)**: आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र आलोचनात्मक चेतना के विकास को बढ़ावा देता है, जहां शिक्षार्थी उन सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक प्रणालियों को पहचानना और चुनौती देना सीखते हैं जो असमानताओं को बनाए रखते हैं।

3. **शिक्षक के रूप में मार्गदर्शक (Teacher as Facilitator)**: फ्रेरे ने शिक्षक की भूमिका को एक आदेश देने वाले प्राधिकारी के रूप में नहीं बल्कि मार्गदर्शक के रूप में देखा । सीआरटी में, शिक्षकों को सीखने के भागीदार के रूप में देखा जाता है जो शिक्षार्थियों को उनके सांस्कृतिक पहचान और अनुभवों की आलोचनात्मक रूप से जांच करने में मार्गदर्शन करते हैं।

वायगोत्स्की का सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत

लव वायगोत्स्की का सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत सीआरटी को समझने के लिए एक और महत्वपूर्ण सैद्धांतिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। वायगोत्स्की का तर्क है कि सीखना स्वाभाविक रूप से एक सामाजिक प्रक्रिया है और उस सांस्कृतिक संदर्भ से प्रभावित होता है। इस सिद्धांत के मुख्य तत्व सीआरटी से संबंधित हैं:

1. **सामाजिक अंतःक्रिया और सीखना (Social Interaction and Learning)**: वायगोत्स्की की समीपस्थ विकास क्षेत्र (**Zone of Proximal Development (ZPD))** अवधारणा बताती है कि शिक्षार्थी उन कार्यों को करने में सक्षम हो सकते हैं जिन्हें वे अन्य लोगों के समर्थन से सहयोग द्वारा कर सकते हैं।
2. **सांस्कृतिक उपकरण (Cultural Tools and Mediators)**: वायगोत्स्की ने सांस्कृतिक उपकरणों (जैसे भाषा, प्रतीक, और प्रथाएं) की भूमिका पर बल दिया जो संज्ञानात्मक विकास को आकार देते हैं।
3. **स्कैफोल्डिंग (Scaffolding)**: यह अवधारणा सीआरटी के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह शिक्षकों को शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक और शैक्षणिक पृष्ठभूमि के आधार पर लक्षित समर्थन प्रदान करने की अनुमति देती है।

ज्ञान के स्रोतों का सिद्धांत

लुइस मोल और उनके सहयोगियों द्वारा विकसित ज्ञान के स्रोतों का सिद्धांत (Funds of Knowledge Theory) एक ऐसा सैद्धांतिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण (सीआरटी) के साथ मेल खाता है। यह सिद्धांत इस बात को स्वीकार करता है कि सभी शिक्षार्थी , विशेष रूप से वंचित समुदायों से आने वाले शिक्षार्थी , अपने घर और समुदाय के अनुभवों से मूल्यवान ज्ञान लेकर आते हैं। इस ज्ञान में सांस्कृतिक प्रथाएँ, पारिवारिक परंपराएँ, समस्या समाधान की रणनीतियाँ, और दैनिक जीवन में उपयोगी कौशल शामिल होते हैं। इस सिद्धांत के कुछ मुख्य घटक निम्नलिखित हैं:

1. सांस्कृतिक संसाधनों की पहचान (Recognition of Cultural Resources):

यह सिद्धांत कहता है कि शिक्षकों को शिक्षार्थियों के जीवन अनुभवों और सांस्कृतिक संसाधनों की पहचान करनी चाहिए और उन्हें अपने शिक्षण में शामिल करना चाहिए। यदि शिक्षक शिक्षार्थियों के अनुभवों और उनके समुदायों के ज्ञान को अपने पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाते हैं, तो वे शिक्षार्थियों के लिए अधिक प्रासंगिक और आकर्षक शिक्षा का वातावरण बना सकते हैं।

उदाहरण: यदि कोई शिक्षार्थी कृषि पृष्ठभूमि से आता है, तो शिक्षक उस शिक्षार्थी के अनुभवों का उपयोग विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन या गणित की कक्षाओं में कर सकते हैं।

2. घर-विद्यालय कनेक्शन (Home-School Connections)

इस सिद्धांत में कहा गया है कि विद्यालय और शिक्षार्थियों के घरों के बीच मजबूत संबंध बनाए जाने चाहिए। सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण (सीआरटी) इस दृष्टिकोण से प्रेरणा लेते हुए शिक्षकों को परिवारों के साथ संवाद करने, उनकी संस्कृतियों को समझने, और इस ज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करता है। शिक्षक शिक्षार्थियों के परिवारों के साथ मिलकर उनकी सांस्कृतिक विरासत को समझ सकते हैं और उनके शिक्षा अनुभवों को समृद्ध कर सकते हैं।

उदाहरण:

- शिक्षक होम विजिट कर सकते हैं या परिवारों को कक्षा में आमंत्रित कर सकते हैं ताकि वे अपनी सांस्कृतिक प्रथाओं को साझा कर सकें।
- शिक्षक परिवारों के सांस्कृतिक उत्सवों को कक्षा में शामिल कर सकते हैं।

3. सांस्कृतिक मान्यता (Cultural Validation)

इस सिद्धांत में बल दिया गया है कि शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को कमजोरी के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे एक संपत्ति के रूप में देखा जाना चाहिए जो शिक्षार्थियों के शैक्षिक अनुभवों में योगदान देती है। सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण इस विचार को अपनाता है कि शिक्षार्थियों के सांस्कृतिक ज्ञान को पाठ्यक्रम में शामिल करने से एक समावेशी और सशक्त वातावरण तैयार किया जा सकता है। जब शिक्षक शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को मान्यता देते हैं, तो वे शिक्षार्थियों में आत्मविश्वास और स्वयं की पहचान का सम्मान बढ़ाते हैं।

उदाहरण:

- शिक्षक शिक्षार्थियों को उनकी पारिवारिक कहानियाँ और संस्कृतियों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।
- शिक्षक पाठ्यक्रम में स्थानीय कहानियाँ, भाषा, और सांस्कृतिक गतिविधियों को शामिल कर सकते हैं।

ज्ञान के स्रोतों का सिद्धांत इस विचार का समर्थन करता है कि शिक्षा को शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक वास्तविकताओं के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए। शिक्षकों को यह समझने की आवश्यकता है कि शिक्षार्थियों का सांस्कृतिक ज्ञान एक शक्तिशाली उपकरण है, जिसे शैक्षिक सफलता के लिए उपयोग किया जा सकता है। यह सिद्धांत उच्च शिक्षा में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शिक्षकों को शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को सकारात्मक रूप से पहचानने और उसे उनके शिक्षण में शामिल करने की प्रेरणा देता है।

4. सांस्कृतिक रूप से पोषित शिक्षण (Culturally Sustaining Pedagogy) – पेरिस, 2012

सांस्कृतिक रूप से पोषित शिक्षण (Culturally Sustaining Pedagogy), जिसे जैंगो पेरिस ने विकसित किया, सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षण (Culturally Relevant Pedagogy) की अवधारणा को और आगे बढ़ाता है। पेरिस (2012) ने तर्क दिया कि शिक्षा को केवल शिक्षार्थियों की संस्कृतियों को स्वीकारने और शामिल करने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उसे उनकी सांस्कृतियों को पोषित और पुनर्जीवित करने का भी कार्य करना चाहिए। यह दृष्टिकोण इस विचार को बढ़ावा देता है कि शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखना और उसे बढ़ावा देना शिक्षा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य होना चाहिए।

मुख्य सिद्धांत:

- **सांस्कृतिक प्रासंगिकता और निरंतरता (Cultural Relevance and Continuity):**

CSP इस बात पर बल देता है कि शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक प्रथाओं को न केवल शामिल किया जाए, बल्कि उन्हें इस तरह से संरक्षित और पोषित किया जाए कि वे अलग-अलग सांस्कृतिक स्थानों में भी प्रासंगिक रहें। यह दृष्टिकोण शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पहचान को स्थायी बनाने का कार्य करता है, जिससे वे अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए अंतर-सांस्कृतिक बातचीत करने में सक्षम हो सकें।

उदाहरण:

- कक्षा में स्थानीय भाषाओं का उपयोग करना।
- शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक विरासत के बारे में चर्चा को प्रोत्साहित करना।

- **रूपांतरकारी पाठ्यक्रम (Transformative Curriculum):**

CSP शिक्षकों को एक ऐसा पाठ्यक्रम विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक प्रथाओं, भाषाओं, और पहचान को बढ़ावा देता है। यह दृष्टिकोण शिक्षार्थियों को मुख्यधारा की शैक्षिक प्रणालियों में आत्मसात करने का विरोध करता है और उन्हें अपनी संस्कृति और भाषा के प्रति गर्व महसूस करने के लिए प्रेरित करता है।

उदाहरण:

- पाठ्यक्रम में स्थानीय इतिहास, पारंपरिक कला, और सांस्कृतिक अनुष्ठानों को शामिल करना।
- शिक्षार्थियों को उनके संस्कृतिकरण के बजाय उनकी सांस्कृतिक विरासत को सशक्त बनाना।

सांस्कृतिक रूप से पोषित शिक्षण **(**CSP**)** सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण (सीआरटी) का एक आवश्यक विस्तार है। यह शिक्षकों को शिक्षार्थियों की संस्कृति को बचाने, पोषित करने**,** और उनकी सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह दृष्टिकोण शिक्षार्थियों को अपने सांस्कृतिक मूल्यों और विरासत को बनाए रखने के लिए सशक्त बनाता है, जिससे वे एकाधिक सांस्कृतिक पहचानों के साथ आत्मविश्वास से जुड़ सकें।

सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण (सीआरटी) के घटक

जिनेवा गे ने अपनी प्रमुख पुस्तक "Culturally Responsive Teaching: Theory, Research, and Practice" (2010) में सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण (CRT) की अवधारणा प्रस्तुत की और लैडसन-बिलिंग्स ने पहली बार सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षाशास्त्र (CRP) की अवधारणा को अपने प्रसिद्ध शोध कार्य " टूवर्ड अ थ्योरी ऑफ कल्चरली रीस्पान्सिव पेडगोजी" (Toward a Theory of Culturally Relevant Pedagogy") में प्रस्तुत किया। उन्होंने सीआरटी के कई प्रमुख घटकों को परिभाषित किया, जो शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करने पर केंद्रित हैं ताकि उनकी शैक्षणिक सफलता को बढ़ाया जा सके और सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित किया जा सके। जिन्हें शिक्षकों को अपनी शिक्षण पद्धति में शामिल करना चाहिए ताकि विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के शिक्षार्थियों की सफलता सुनिश्चित की जा सके ।

घटक (Component)	**विवरण (Description)**	**संदर्भ (Reference)**
शैक्षणिक सफलता (Academic Success)	उच्च शैक्षणिक अपेक्षाओं को बढ़ावा देता है।	बिलिंगस (1995), पृष्ठ, 160
सांस्कृतिक क्षमता (Cultural Competence)	शिक्षकों को विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पहचान को पहचानने और इसे पढ़ाने में शामिल करने के लिए प्रेरित करता है।	बिलिंगस (1995), पृष्ठ,163; गे (2010), पृष्ठ, 58

आलोचनात्मक चेतना (Critical Consciousness)	विद्यार्थियों को सामाजिक अन्याय के प्रति जागरूकता को बढ़ावा और सामाजिक असमानताओं को चुनौती देने और उनके समाधान के लिए प्रेरित करता है।	बिलिंगस (1995), पृष्ठ, 167; फ्रेरे (1970), पृष्ठ, 45; गे (2010), पृष्ठ, 132
सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक पाठ्यक्रम (Culturally Relevant Curriculum)	विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और अनुभवों को पाठ्यक्रम में दर्शाता है।	गे (2010), पृष्ठ, 31
सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त संचार (Culturally Appropriate Communication)	विद्यार्थियों की सांस्कृतिक मानदंडों के अनुसार संचार शैली को अनुकूलित करता है।	गे (2010), पृष्ठ, 84
सभी के लिए उच्च अपेक्षाएं (High Expectations for All)	सभी विद्यार्थियों के लिए उच्च शैक्षणिक मानक तय करता है और नकारात्मक दृष्टिकोणों को अस्वीकार करता है।	गे (2010), पृष्ठ, 45
सांस्कृतिक संसाधनों का उपयोग (Using Cultural Resources)	शिक्षण संसाधन के रूप में विद्यार्थियों के सांस्कृतिक ज्ञान का उपयोग करता है।	गे (2010), पृष्ठ, 75
सामुदायिक भागीदारी (Community Engagement)	सामुदायिक ज्ञान को कक्षा में लाने के लिए प्रेरित करता है ।	गे (2010), पृष्ठ, 120; बैंक्स (2004), पृष्ठ, 88
शिक्षा में समावेशिता (Inclusivity in Education)	सभी विषयों और कक्षाओं के लिए लागू, जो विविध शिक्षण वातावरण के लिए अनिवार्य है।	(गे, 2010; चौधरी और गोपाल, 2024)
सार्वभौमिक छात्र प्रभाव (Universal Student Impact)	सभी छात्रों को लाभ पहुंचाता है, जिससे विभिन्न जनसांख्यिकीय समूहों में शैक्षणिक परिणाम बेहतर होते हैं।	(गे, 2010; चौधरी और गोपाल, 2024)
शिक्षक प्रशिक्षण (Teacher Training)	सांस्कृतिक ज्ञान और शिक्षण विधियों को शामिल करने वाले पेशेवर विकास की आवश्यकता होती है।	(गे, 2010; चौधरी और गोपाल, 2024)

1. शैक्षणिक सफलता (Academic Success)

ग्लोरिया लैडसन-बिलिंग्स (1995) इस बात पर बल देती हैं कि शैक्षणिक सफलता सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षाशास्त्र (Culturally Relevant Pedagogy) का एक प्रमुख घटक है। उनका मानना है कि शिक्षकों को सभी शिक्षार्थियों, विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों के शिक्षार्थियों के लिए उच्च शैक्षणिक अपेक्षाएँ निर्धारित करनी चाहिए और 'घाटे आधारित सोच' (deficit-based thinking) को अस्वीकार करना चाहिए। सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण (CRT) में शैक्षणिक सफलता का अर्थ यह नहीं है कि शिक्षार्थी प्रमुख संस्कृति में आत्मसात (assimilation) करें। इसके बजाय, यह शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का सम्मान करते हुए कठोर शैक्षणिक मानकों को बनाए रखने पर केंद्रित है (गे, 2010)।

"सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षक शिक्षार्थियों के पूर्व ज्ञान और अनुभवों का उपयोग करके शैक्षणिक सफलता को बढ़ावा देते हैं" (बिलिंगस , 1995, पृष्ठ 160)। "शैक्षणिक सफलता को इस प्रकार परिभाषित किया जाना चाहिए कि शिक्षार्थी अपनी सांस्कृतिक पहचान खोए बिना उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें" (बिलिंगस, 1995, पृष्ठ 161)। "शिक्षकों को कक्षा की सामग्री को शिक्षार्थियों के वास्तविक जीवन के अनुभवों से जोड़कर शिक्षा को अर्थपूर्ण बनाना चाहिए" (बिलिंगस, 1994, पृष्ठ 30)।

2. सांस्कृतिक दक्षता (Cultural Competence)

सांस्कृतिक दक्षता का अर्थ है कि शिक्षार्थियों को उनकी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने में सहायता करना और साथ ही उन्हें अन्य संस्कृतियों के बारे में भी ज्ञान देना। लैडसन-बिलिंग्स (1995) बताती हैं कि शिक्षकों को शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को एक मूल्यवान संपत्ति के रूप में मानना चाहिए और इसे सीखने के लिए एक संसाधन के रूप में उपयोग करना चाहिए। जिनेवा गे (2010) भी इस विचार का समर्थन करती हैं कि शिक्षार्थियों के सांस्कृतिक अनुभवों को शिक्षण में शामिल करना सीखने को अधिक प्रभावी बनाता है। गे (गे) सांस्कृतिक योग्यता को शिक्षकों की यह क्षमता बताते हैं कि वे शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पहचान को पहचानें, उनका सम्मान करें और उन्हें अपनी शिक्षण पद्धतियों में शामिल करें। शिक्षकों को शिक्षार्थियों की संस्कृतियों के बारे में लगातार सीखना चाहिए और इस ज्ञान का उपयोग शिक्षण निर्णयों को निर्देशित करने के लिए करना चाहिए। सांस्कृतिक योग्यता में सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों को संबोधित करना और यह सुनिश्चित करना भी शामिल है कि कक्षा प्रथाएँ किसी भी समूह को हाशिए पर न डालें।

"सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षाशास्त्र शिक्षकों से यह अपेक्षा करता है कि वे शिक्षार्थियों के सांस्कृतिक ज्ञान को वैध और मूल्यवान मानें" (बिलिंगस, 1995, पृष्ठ 163)। "सांस्कृतिक दक्षता का अर्थ है शिक्षार्थियों की संस्कृति का उपयोग शैक्षणिक सफलता के लिए एक आधार के रूप में करना" (गे, 2010, पृष्ठ 50)। "शिक्षकों को शिक्षार्थियों के सांस्कृतिक अनुभवों का उपयोग सीखने को अधिक प्रासंगिक और रोचक बनाने के लिए करना चाहिए" (बिलिंगस , 2001, पृष्ठ 80)। "शिक्षकों को अपने सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों पर विचार करना चाहिए और यह देखना चाहिए कि ये उनके शिक्षण प्रथाओं को कैसे प्रभावित कर सकते हैं" (गे , 2010, पृष्ठ 60)। "संस्कृति आधारित शिक्षण में शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

के बारे में जानें और इस जानकारी का उपयोग शिक्षण निर्णयों को मार्गदर्शित करने के लिए करें" (गे , 2010, पृष्ठ 58)।

3. **आलोचनात्मक चेतना (Critical Consciousness)**

लैडसन-बिलिंग्स के सिद्धांत का सबसे विशिष्ट घटक है आलोचनात्मक चेतना (Critical Consciousness)। वह कहती हैं कि शिक्षार्थियों को यह सिखाया जाना चाहिए कि वे सामाजिक असमानताओं का आलोचनात्मक विश्लेषण करें और उन्हें हल करने के लिए कदम उठाएँ। पाउलो फ्रेरे (1970) भी अपने आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र (Critical Pedagogy) के सिद्धांत में इस बात पर बल देते हैं कि शिक्षा को शिक्षार्थियों को सामाजिक परिवर्तन के लिए एजेंट बनने के लिए सशक्त बनाना चाहिए।

"सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षण शिक्षार्थियों को सामाजिक असमानताओं को पहचानने और चुनौती देने में सहायता करनी चाहिए" (बिलिंगस, 1995, पृष्ठ 167)। "शिक्षा एक राजनीतिक कार्य है। शिक्षकों को शिक्षार्थियों को यह सिखाना चाहिए कि वे दुनिया का आलोचनात्मक विश्लेषण करें और परिवर्तनकारी कदम उठाएँ" (Freire, 1970, पृष्ठ 45)। "शिक्षकों को शिक्षार्थियों को ऐसी परियोजनाओं में शामिल करना चाहिए जो उन्हें वास्तविक दुनिया की सामाजिक समस्याओं का समाधान करने की अनुमति दें" (बिलिंगस, 1995, पृष्ठ 169)।

4. **संस्कृति आधारित पाठ्यक्रम (Culturally Relevant Curriculum)**

जिनेवा गे (गे) का कहना है कि पाठ्यक्रम को विविध शिक्षार्थियों के सांस्कृतिक अनुभवों को प्रतिबिंबित करना चाहिए। एक संस्कृति आधारित पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक जानकारी, विरासत और अनुभवों को कक्षा की सामग्री में शामिल करके सीखने को अधिक प्रासंगिक और अर्थपूर्ण बनाता है। यह केवल यूरोप-केंद्रित पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि विभिन्न संस्कृतियों के लेखकों, इतिहासों और योगदानों को भी शामिल करना चाहिए।

"पाठ्यक्रम सामग्री को शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को दर्शाना चाहिए, ताकि उनकी जानकारी और दृष्टिकोणों को मान्य और मूल्यवान माना जा सके" (गे, 2010, पृष्ठ 31)। "संस्कृति आधारित पाठ्यक्रम सांस्कृतिक आधिपत्य को चुनौती देता है और विविध दृष्टिकोणों और आवाज़ों को प्रस्तुत करता है" (गे, 2010, पृष्ठ 35)।

5. **सांस्कृतिक जागरूकता (Cultural Awareness)**

सांस्कृतिक जागरूकता शिक्षकों और विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों के मूल्यों, परंपराओं, और दृष्टिकोणों को समझने और सम्मान करने के लिए प्रेरित करती है। यह घटक शिक्षण को अधिक समावेशी और संवेदनशील बनाता है, जिससे सांस्कृतिक विविधता का सम्मान होता है। शिक्षकों को सांस्कृतिक मतभेदों को समझने और उन्हें एक अवसर के रूप में देखने के लिए तैयार किया जाता है। यह जागरूकता विद्यार्थियों को वैश्विक नागरिक बनने और विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में प्रभावी ढंग से संवाद करने में सहायता करती है (बैंक्स, 2004, पृष्ठ 101; गे, 2010, पृष्ठ 92) ।

6. **संस्कृति आधारित संवाद (Culturally Appropriate Communication)**

जेनेवा गे ने बताया है कि विभिन्न संस्कृतियों में संवाद की शैली अलग-अलग होती है। शिक्षकों को संवाद के दौरान शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक मानदंडों के अनुसार अपनी संचार शैली को अनुकूलित करना चाहिए। इसमें गैर-मौखिक संकेतों, बोलने के तरीकों और बातचीत की शैलियों को समझना शामिल है।

"संस्कृति आधारित शिक्षक मानते हैं कि संवाद की शैलियाँ सांस्कृतिक मानदंडों में गहराई से निहित हैं और उनका सम्मान किया जाना चाहिए" (गे, 2010, पृष्ठ 84)। उदाहरण के लिए, कुछ संस्कृतियों में सामूहिक चर्चा को प्राथमिकता दी जाती है, जबकि अन्य में व्यक्तिगत प्रतिक्रिया को महत्व दिया जाता है। शिक्षकों को इन अंतर को समझने और समावेशी वातावरण बनाने की आवश्यकता है। "शिक्षक और शिक्षार्थियों के बीच संवाद में गलतफहमी शिक्षा में असमानताओं को बढ़ा सकती है" (गे , 2010, पृष्ठ 87)।

7. **सभी शिक्षार्थियों के लिए उच्च अपेक्षाएँ (High Expectations for All Students)**

जिनेवा गे (गे) ने इस बात पर बल दिया है कि शिक्षकों को सभी शिक्षार्थियों, विशेष रूप से वंचित समूहों के शिक्षार्थियों के लिए उच्च शैक्षणिक अपेक्षाएँ रखनी चाहिए। शिक्षकों को यह मानना चाहिए कि सभी शिक्षार्थी अकादमिक सफलता प्राप्त करने में सक्षम हैं और अपनी उम्मीदों को शिक्षार्थियों तक पहुँचाना चाहिए।

"संस्कृति आधारित शिक्षक मानते हैं कि सभी शिक्षार्थी अकादमिक सफलता प्राप्त कर सकते हैं और वे अपनी अपेक्षाओं को शिक्षार्थियों तक प्रभावी ढंग से संप्रेषित करते हैं" (गे, 2010, पृष्ठ 45)। इसका मतलब है कि शिक्षार्थियों को कठोर निर्देश देना और साथ ही उन्हें समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करना ताकि वे सफलता प्राप्त कर सकें। "अपेक्षाएँ यह निर्धारित करती हैं कि शिक्षार्थी अपने बारे में क्या सोचते हैं और वे कितनी सफलता प्राप्त कर सकते हैं" (गे, 2010, पृष्ठ 49)।

8. शिक्षण के लिए सांस्कृतिक संसाधनों का उपयोग (Using Cultural Resources for Instruction)

गे (गे) इस बात पर बल देते हैं कि शिक्षकों को शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक जानकारी और अनुभवों का उपयोग शिक्षण के लिए संसाधन के रूप में करना चाहिए। इसमें स्थानीय समुदाय के संसाधनों, सांस्कृतिक कलाकृतियों और वास्तविक जीवन के अनुभवों को कक्षा में शामिल करना शामिल है।

"शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक जानकारी एक शक्तिशाली उपकरण हो सकती है जो सीखने को अधिक अर्थपूर्ण और प्रासंगिक बनाती है" (गे, 2010, पृष्ठ 75)। उदाहरण के लिए, समुदाय के बुजुर्गों या सांस्कृतिक नेताओं को आमंत्रित किया जा सकता है ताकि वे अपने अनुभव और ज्ञान शिक्षार्थियों के साथ साझा कर सकें। "शिक्षण में सामुदायिक संसाधनों को शामिल करना शिक्षार्थियों के घरेलू जीवन और स्कूल के अनुभवों के बीच की खाई को पाटता है" (गे, 2010, पृष्ठ 78)।

9. आलोचनात्मक चेतना और सामाजिक न्याय (Critical Consciousness and Social Justice)

जिनेवा गे ने पाउलो फ्रेरे (Freire, 1970) के आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र के सिद्धांतों से प्रेरित होकर कहा है कि शिक्षकों को शिक्षार्थियों में आलोचनात्मक चेतना विकसित करनी चाहिए। इसमें शिक्षार्थियों को सामाजिक अन्याय की पहचान करने और उनका समाधान निकालने के लिए प्रेरित करना शामिल है। "संस्कृति आधारित शिक्षण शिक्षार्थियों को सामाजिक अन्याय को पहचानने और उनका समाधान निकालने के लिए कौशल प्रदान करता है" (गे, 2010, पृष्ठ 132)। शिक्षार्थियों को शक्ति

संरचनाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण करने और समानता को बढ़ावा देने के लिए कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। "शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के लिए एक उपकरण है, और शिक्षार्थियों को अपने समुदायों में परिवर्तनकारी एजेंट बनने के लिए सशक्त बनाया जाना चाहिए" (गे, 2010, पृष्ठ 134)।

10. **सामुदायिक भागीदारी (Community Engagement)**

विद्यार्थियों के सांस्कृतिक समुदायों के साथ साझेदारी विकसित करने का उद्देश्य शिक्षण को अधिक प्रासंगिक और व्यावहारिक बनाना है। सामुदायिक भागीदारी का अर्थ है शिक्षकों और शिक्षार्थियों के बीच ऐसी गतिविधियाँ और संवाद स्थापित करना जो समुदाय के भीतर सांस्कृतिक ज्ञान और परंपराओं को समझने में सहायता करें। उदाहरण के लिए, शिक्षक स्थानीय समुदायों के नेताओं, व्यवसायियों, और सांस्कृतिक विशेषज्ञों को कक्षा में आमंत्रित कर सकते हैं ताकि शिक्षार्थी वास्तविक जीवन की समस्याओं को समझें और उनके समाधान पर काम करें। यह घटक शिक्षार्थियों को उनके समुदाय से जोड़ने के साथ-साथ उनकी पहचान को सुदृढ़ करता है। सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से विद्यार्थी सीखते हैं कि उनके सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं का उपयोग सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के समाधान में कैसे किया जा सकता है। यह उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता है और सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देता है (गे, 2010, पृष्ठ 120; बैंक्स, 2004, पृष्ठ 88) ।

11. **शिक्षा में समावेशिता (Inclusivity in Education)**

शिक्षा में समावेशिता का अर्थ है कि सभी विषयों और कक्षाओं में विविध पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण प्रक्रियाओं को डिज़ाइन किया जाए। यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी छात्र सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषाई, या शारीरिक कारणों से शिक्षा से वंचित न रहे।

समावेशी शिक्षा केवल विशेष जरूरतों वाले छात्रों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह उन सभी छात्रों के लिए है जो किसी भी प्रकार की भिन्नता रखते हैं—जैसे कि भाषा, जातीयता, लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, या सीखने की शैली। जिनेवा गे (2010) के अनुसार, एक समावेशी शिक्षण वातावरण छात्रों की सांस्कृतिक विविधता को सम्मान और मान्यता देता है। चौधरी और गोपाल (2024) भी इस विचार का समर्थन करते हैं कि समावेशी शिक्षा विविध छात्र समूहों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षकों को अपनी शिक्षण रणनीतियों को अनुकूलित करने की आवश्यकता होती है।

12. सार्वभौमिक छात्र प्रभाव (Universal Student Impact)

सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र (CRT) केवल एक विशेष समूह के छात्रों के लिए लाभकारी नहीं है, बल्कि यह सभी छात्रों को लाभ पहुंचाता है। इस दृष्टिकोण से शिक्षण करने पर सभी छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार होता है, क्योंकि यह शिक्षा को अधिक प्रासंगिक और व्यक्तिगत बनाता है।

जिनेवा गे (2010) बताती हैं कि जब शिक्षक छात्रों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझते हैं और उसे शिक्षण में शामिल करते हैं, तो इससे सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी होती है। चौधरी और गोपाल (2024) के अनुसार, समावेशी और सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र सभी जनसांख्यिकीय समूहों में शैक्षणिक प्रदर्शन में वृद्धि करता है, क्योंकि यह छात्रों को उनकी पृष्ठभूमि के अनुरूप संसाधन और समर्थन प्रदान करता है।

13. शिक्षक प्रशिक्षण (Teacher Training)

शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि वे सांस्कृतिक ज्ञान और प्रभावी शिक्षण विधियों को सीखें और उन्हें अपने शिक्षण में शामिल करें। शिक्षकों को यह समझना चाहिए कि विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से आने वाले छात्रों की सीखने की आवश्यकताएँ भिन्न हो सकती हैं, और इसके लिए उन्हें अपनी शिक्षण रणनीतियों को समायोजित करने की आवश्यकता होती है।

जिनेवा गे (2010) के अनुसार, सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए शिक्षकों को पेशेवर प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रमों की आवश्यकता होती है। चौधरी और गोपाल (2024) इस बात पर ज़ोर देते हैं कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सांस्कृतिक विविधता, पूर्वाग्रह मुक्त शिक्षण, और समावेशी शिक्षण पद्धतियों को शामिल किया जाना चाहिए ताकि शिक्षक विविध छात्रों के लिए बेहतर शिक्षण अनुभव बना सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों के साथ संबंध

1. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020**

एनईपी 2020 समावेशिता, समानता और शिक्षा में सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों की विविधता की पहचान करने पर बल देती है। यह नीति एक लचीली, शिक्षार्थी -केंद्रित सीखने के वातावरण की वकालत करती है जो विभिन्न सांस्कृतिक और भाषाई पृष्ठभूमियों से आने वाले शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप होती है। सीआरटी एनईपी के दृष्टिकोण के साथ मेल खाती है, क्योंकि यह सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक सामग्री और शिक्षण विधियों के एकीकरण को बढ़ावा देती है जो भारत की शिक्षार्थी संख्या की विविधता को दर्शाती हैं । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) अपने विभिन्न प्रावधानों, जैसे पैरा 4.4, पैरा 9.3 (d), पैरा 11.6, पैरा 12.1, पैरा 12.2 और पैरा 12.6, में नवाचारी शिक्षण विधियों और उनके उच्च शिक्षा में योगदान की कल्पना करती है। एनईपी में बहुभाषावाद और स्थानीय ज्ञान के महत्व पर भी बल दिया गया है, जिसे सीआरटी क्षेत्रीय भाषाओं, परंपराओं और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को पाठ्यक्रम में समाहित करके साकार कर सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा में सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण प्रावधान प्रस्तुत करती है।

मातृभाषा और स्थानीय भाषाओं में शिक्षा: नीति के अनुसार, अधिक उच्च शिक्षा संस्थान (HEI) और कार्यक्रम मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा प्रदान करेंगे, जिससे भारतीय भाषाओं की शक्ति, उपयोग और जीवंतता को बढ़ावा मिलेगा और पहुंच और सकल नामांकन अनुपात में बढ़ोतरी हो सके (अनुभाग 22.10)। यह सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र (CRP) के साथ मेल खाता है, जो इस बात पर जोर देता है कि शिक्षण इस तरह किया जाए जो छात्रों की भाषाई पृष्ठभूमि को स्वीकार करे और उसका लाभ उठाए, जिससे समझ और सांस्कृतिक प्रासंगिकता बढ़े (गे, 2010; चौधरी और गोपाल, 2024)।

भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाले कार्यक्रम: नीति में अनुवाद और व्याख्या, कला और संग्रहालय प्रशासन, पुरातत्व, संरक्षण, ग्राफिक डिजाइन आदि क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाले कार्यक्रमों और डिग्रियों के निर्माण की बात कही गई है, जिससे

भारतीय कला और संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन हो सके (अनुभाग 22.11)।

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' पहल के तहत पर्यटन स्थलों की पहचान: नीति के अनुसार, शिक्षार्थियों को भारत के विभिन्न हिस्सों की विविधता, संस्कृति, परंपराओं और ज्ञान की समझ और प्रशंसा के लिए देश के विभिन्न हिस्सों में भ्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। इस पहल के तहत 100 पर्यटन स्थलों की पहचान की जाएगी (अनुभाग 22.12)।

भारतीय भाषाओं में डिग्री पाठ्यक्रमों का विकास: नीति में भारतीय भाषाओं में और द्विभाषी रूप से पढ़ाए जाने वाले अधिक डिग्री पाठ्यक्रम विकसित करने की बात कही गई है, जिससे शिक्षा अधिक समावेशी और सुलभ हो सके। यह प्रावधान अनुभाग 14.4.2 (छ) में वर्णित है।

समानता और समावेशन पर जोर: NEP 2020 समानता पर विशेष ध्यान देता है, जिसका उद्देश्य सभी को, विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाले और वंचित समुदायों को, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। यह उन बाधाओं को दूर करने का प्रयास करता है जो विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के छात्रों को शिक्षा प्राप्त करने से रोकती हैं (अनुभाग 6.2)। यह नीति एसईडीजी पर विशेष जोर देते हुए सभी छात्रों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की समान पहुँच सुनिश्चित करती है (अनुभाग 14.1)।

सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र (CRP) का मुख्य लक्ष्य एक समान शिक्षण वातावरण बनाना है, जहाँ सभी छात्रों को सम्मानित और शामिल महसूस हो, यह सुनिश्चित करते हुए कि विभिन्न सांस्कृतिक पहचानों को प्रतिनिधित्व और महत्व दिया जाए (गे, 2010; चौधरी और गोपाल, 2024)।

संबद्धता और पहचान की भावना विकसित करना: NEP 2020 भारत की सांस्कृतिक विविधता पर गर्व विकसित करने का लक्ष्य रखता है, जिससे ऐसी शिक्षा को बढ़ावा दिया जा सके जो सभी सांस्कृतिक पहचानों का सम्मान और उत्सव मनाए, और इस प्रकार छात्रों में जुड़ाव की भावना उत्पन्न करे। भारत के युवाओं को भारत देश के बारे में और इसकी विविध सामाजिक, सांस्कृतिक, और तकनीकी आवश्यकताओं सहित यहाँ की अद्वितीय कला, भाषा और ज्ञान परंपराओं के बारे में ज्ञानवान बनाना राष्ट्रीय गौरव, आत्मविश्वास, आत्मज्ञान, परस्पर सहयोग और एकता की दृष्टि से और भारत के सतत ऊंचाइयों की ओर बढ़ने की दृष्टि से अतिआवश्यक है (पृष्ठ 5, पैराग्राफ 11)। CRP सीधे छात्रों की सांस्कृतिक पहचान के विकास का समर्थन करता है, एक समावेशी वातावरण बनाकर जिसमें उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को उनकी शिक्षा की संपत्ति के रूप में देखा जाता है। व्यक्तिगत शिक्षण दृष्टिकोणों का समर्थन करता है जो छात्रों की विविध सांस्कृतिक और शैक्षिक आवश्यकताओं का सम्मान और उत्तर देते हैं, जिससे आत्म-अभिव्यक्ति और चयन को प्रोत्साहन मिलता है (चौधरी और गोपाल, 2024, पृष्ठ 3)।

कला, संस्कृति और स्थानीय परंपराओं का एकीकरण: **NEP 2020** शिक्षा प्रणाली में कला, संगीत और पारंपरिक शिल्प को शामिल करने को प्रोत्साहित करता है, यह स्वीकार करते हुए कि वे सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और छात्रों को सीखने में संलग्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारतीय कला एवं संस्कृति का संवर्धन न सिर्फ राष्ट्र बल्कि व्यक्तियों के लिए भी महत्वपूर्ण है। बच्चों में अपनी पहचान और अपनेपन के भाव तथा अन्य संस्कृतियों और पहचानों की सराहना का भाव पैदा करने के लिए सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति जैसी प्रमुख क्षमताओं को बच्चों में विकसित करना ज़रूरी है (अनुभाग 22.2, पृष्ठ 86)। सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र (CRP) कला और स्थानीय परंपराओं सहित सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक सामग्री के उपयोग का समर्थन करता है, ताकि छात्रों के सांस्कृतिक अनुभवों से सीखने को जोड़ा जा सके (चौधरी और गोपाल, 2024, पृष्ठ 3)।

2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ़) 2022

एनसीएफ़ 2022 शिक्षा के लिए एक समावेशी, समग्र और बहुविषयक दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल देता है (एनसीफफई , 2022, पृष्ठ 30, अनुभाग 12.4)। यह शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों को दर्शाने वाली संदर्भित शिक्षा की आवश्यकता को भी महत्वपूर्ण मानता है। एनसीएफ़ शिक्षण और मूल्यांकन प्रथाओं में विभिन्न सांस्कृतिक दृष्टिकोणों के एकीकरण का समर्थन करता है, जिससे सीआरटी इसके लक्ष्यों के लिए एक स्वाभाविक मेल है। शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पहचान को शिक्षण प्रक्रिया में समाहित करके, सीआरटी शिक्षा प्रणाली को समावेशी, समान और सभी शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी बनाने में योगदान कर सकता है ((एनसीफफई , 2022, पृष्ठ 76, खंड 3.2; एनसीफसई , 2023, पृष्ठ 54)।

3. यूजीसी नवाचारी शैक्षिक दृष्टिकोण और मूल्यांकन सुधार दिशानिर्देश (2022)

यूजीसी (2022) के नवाचारात्मक शिक्षण पद्धतियाँ एवं मूल्यांकन सुधार दिशानिर्देश सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण (CRT) के साथ जुड़ते हैं क्योंकि ये समावेशी, विद्यार्थी-केंद्रित और विविध शिक्षण-प्रक्रियाओं पर बल देते हैं। ये दिशानिर्देश अनुभवात्मक, जिज्ञासा-आधारित, समस्या-समाधान एवं अंतर्विषयक शिक्षण पद्धतियों को प्रोत्साहित करते हैं, जिससे उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में स्थानीय ज्ञान, स्वदेशी प्रथाओं और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों का समावेश किया जा सके। इसके अतिरिक्त, ये दिशानिर्देश लचीले मूल्यांकन तरीकों पर बल देते हैं, जैसे कि पोर्टफोलियो-आधारित मूल्यांकन, सहकर्मी मूल्यांकन, सामुदायिक परियोजनाएँ और मौखिक परंपराएँ, जो ज्ञान को अभिव्यक्त करने के विविध तरीकों को स्वीकार करते हैं। ये सुधार प्रासंगिक शिक्षण, बहुभाषी संसाधनों और सहभागी शिक्षण को बढ़ावा देते हैं, जिससे शिक्षा विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के लिए अधिक सुलभ, प्रासंगिक और न्यायसंगत बनती है।इसके अलावा, दिशानिर्देश संकाय प्रशिक्षण को बढ़ावा देते हैं ताकि शिक्षक समावेशी शिक्षण पद्धतियों को अपनाएँ जो विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पहचान का सम्मान करती हैं और उन्हें पाठ्यक्रम में समाहित करती हैं। इन प्रयासों के माध्यम से, ये दिशानिर्देश भारत में न्यायसंगत, सांस्कृतिक रूप से जागरूक और सामाजिक रूप से न्यायसंगत उच्च शिक्षा प्रणाली को विकसित करने में सहायक सिद्ध होते हैं (*नवाचारात्मक शिक्षण पद्धतियाँ एवं मूल्यांकन सुधार दिशानिर्देश, यूजीसी (2022)*।

4. उच्च शिक्षा संस्थानों को बहु-विषयक संस्थानों में परिवर्तित करने के दिशा-निर्देश (2022)

यूजीसी (2022) द्वारा जारी "उच्च शिक्षा संस्थानों को बहु-विषयक संस्थानों में परिवर्तित करने के दिशा-निर्देश" सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण (सीआरटी) के सिद्धांतों के अनुरूप हैं, क्योंकि वे समावेशी, विविध और लचीले शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देते हैं। ये दिशा-निर्देश अंतःविषयक शिक्षा पर जोर देते हैं, जिससे क्षेत्रीय ज्ञान, स्वदेशी परंपराओं और

सांस्कृतिक विरासत को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जा सके, जिससे यह विभिन्न छात्र पृष्ठभूमियों के लिए अधिक प्रासंगिक बने। ये लचीले शिक्षण मार्गों का समर्थन करते हैं, जिससे छात्र अपने सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के अनुरूप शिक्षा से जुड़ सकें।

इसके अतिरिक्त, ये दिशा-निर्देश सामुदायिक सहभागिता को प्रोत्साहित करते हैं, जिससे स्थानीय उद्योगों और कारीगरों के साथ साझेदारी करके सांस्कृतिक रूप से निहित कौशल विकास को बढ़ावा दिया जा सके। साथ ही, शिक्षक प्रशिक्षण पर भी जोर दिया गया है ताकि शिक्षक सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण रणनीतियों को अपनाएं। इसके अलावा, समग्र मूल्यांकन पद्धतियों की सिफारिश की गई है, जिसमें मौखिक परंपराओं, सामुदायिक परियोजनाओं और व्यावहारिक अनुप्रयोगों को शामिल किया गया है, जो विभिन्न सांस्कृतिक अधिगम शैलियों को मान्यता देते हैं। कुल मिलाकर, ये दिशा-निर्देश भारत में एक अधिक न्यायसंगत, सांस्कृतिक रूप से जागरूक और समावेशी उच्च शिक्षा प्रणाली को विकसित करने में सहायक हैं (*उच्च शिक्षा संस्थानों को बहु-विषयक संस्थानों में परिवर्तित करने के दिशा-निर्देश; यूजीसी, 2022*)।

भारतीय संदर्भ में सीआरटी :

भारतीय संदर्भ में, सीआरटी की अवधारणा देश की विशाल भाषाई, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय विविधता के कारण महत्वपूर्ण हो रही है। राव (2015) यह बताते हैं कि भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से "एक आकार सभी के लिए उपयुक्त" शिक्षा मॉडल का पालन करती रही है, जो अक्सर शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की विविधता को नजरअंदाज करती है। इसका परिणाम विशेष रूप से ग्रामीण और हाशिए समुदायों के शिक्षार्थियों के शैक्षिक परिणामों में असमानता के रूप में सामने आता है। राव का तर्क है कि सीआरटी एक शक्तिशाली ढांचा प्रदान करता है, जो इस अंतर को दूर करने के लिए शिक्षण प्रथाओं को शिक्षार्थियों की विविध जरूरतों के अनुरूप ढालता है (राव, 2015, पृष्ठ 89)।

नायक और रंजन (2019) अपने अध्ययन में भारत में शैक्षिक समानता सुधारने में सीआरटी की संभावनाओं का अन्वेषण करते हैं। वे यह बताते हैं कि भारतीय कक्षाओं में विभिन्न भाषाई, सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के शिक्षार्थी होते हैं। पाठ्यक्रम और शिक्षण रणनीतियों में सांस्कृतिक विविधता को शामिल करके, सीआरटी अधिक समावेशी कक्षाएं बना सकता है जहाँ सभी शिक्षार्थियों को मूल्यवान और समर्थित महसूस हो। नायक और रंजन का शोध यह सुझाव देता है कि जबकि सीआरटी हाशिए पर रहने वाले समूहों की शैक्षिक जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक है, इसकी कार्यान्वयन में शिक्षक प्रशिक्षण की कमी, शैक्षिक बदलावों का प्रतिरोध, और शिक्षा प्रणाली के केंद्रीकरण के कारण समस्याएं उत्पन्न होती हैं। "भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली को एक ऐसी सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील शैक्षिक पद्धति को अपनाना चाहिए, जो शिक्षार्थियों की विविध सांस्कृतिक पहचानों को स्वीकार और समाहित करती हो" (पृष्ठ 46)। यह बदलाव पाठ्यक्रम और शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक वास्तविकताओं के बीच के अंतर को पाटने के लिए आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 और यूजीसी दिशानिर्देशों का परिचय इस विषय पर एक राष्ट्रीय संवाद की शुरुआत कर चुका है, जिसमें सीआरटी के महत्व पर बल दिया गया है।

इसके अतिरिक्त, सहा (2018) के अध्ययन में भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली में सांस्कृतिक विविधता को शामिल करने के लिए पाठ्यक्रम को अनुकूलित करने के महत्व पर चर्चा की गई है। सहा का शोध यह सुझाव देता है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली पश्चिमी ज्ञान प्रणालियों पर अधिक बल देती है, जो गैर-पश्चिमी सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के शिक्षार्थियों को अलग-थलग कर सकती है। पाठ्यक्रम में स्थानीय संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं को समाहित करके, सीआरटी शिक्षार्थियों की संलग्नता को बढ़ा सकता है और एक सशक्त भावनात्मक संबंध पैदा कर सकता है, जो बेहतर शैक्षिक प्रदर्शन की ओर ले जा सकता है।

भारतीय संदर्भ में, पारंपरिक शिक्षा प्रणाली अक्सर एक समान दृष्टिकोण अपनाती है, जो शिक्षार्थी समुदाय की विविधता को नजरअंदाज करती है। "कठोर पाठ्यक्रम ढांचा भारतीय शिक्षार्थियों की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता का ध्यान नहीं रखता, जिसके परिणामस्वरूप कुछ समूहों का हाशियाकरण होता है" (राव, 2015, पृष्ठ 89)। हालांकि, यह बढ़ती हुई पहचान है कि सीआरटी के सिद्धांत भारतीय शिक्षा प्रणाली में उन शिक्षार्थियों के लिए जो हाशिए पर हैं, जैसे दलित, आदिवासी, और ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले शिक्षार्थी की असमानताओं को दूर करने के लिए आवश्यक हैं ।

उच्च शिक्षा में संस्कृति रूप से उत्तरदायी शिक्षण को लागू करने के अवसर और चुनौतियाँ

सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण (सीआरटी) को उच्च शिक्षा में लागू करने से समावेशी अध्ययन वातावरण को बढ़ावा देने के महत्वपूर्ण अवसर मिलते हैं। हालांकि, इस प्रक्रिया में कुछ चुनौतियाँ भी हैं जिन्हें संस्थानों, शिक्षकों और नीति निर्माताओं को सीआरटी के सफल एकीकरण को सुनिश्चित करने के लिए संबोधित करना होगा। यह खंड भारतीय उच्च शिक्षा के संदर्भ में सीआरटी के अपनाने से जुड़े अवसरों और अवरोधों को रेखांकित करता है, विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ़) 2022, और यूजीसी दिशानिर्देशों (2022) को ध्यान में रखते हुए।

सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षा को लागू करने के अवसर

1. **समावेशी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देना**

सीआरटी (सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षा) यह अवसर प्रदान करता है कि कक्षाओं को शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पहचान को महत्व देकर अधिक समावेशी बनाया जाए, और इन्हें शिक्षा में बाधा के रूप में नहीं बल्कि संपत्ति के रूप में पहचाना जाए (गे , 2018)। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से विविध समाजों में, यह दृष्टिकोण हाशिए पर मौजूद समूहों जैसे अनुसूचित जाति (SCs), अनुसूचित जनजाति (STs), और अन्य पिछड़ा वर्ग (OBCs) के बीच उपलब्धि की खाई को कम करने में सहायता कर सकता है (बनक्स & बनक्स, 2019)। एनईपी 2020 शिक्षा में समावेशिता और समानता पर बल देती है और संस्थानों को ऐसे शिक्षण अभ्यास अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है जो विविधता का सम्मान करते हैं और सभी शिक्षार्थियों के बीच एकजुटता की भावना को बढ़ावा देते हैं ।

2. **शिक्षार्थियों की संलिप्तता और शैक्षिक सफलता को बढ़ाना**

अनुसंधान दर्शाता है कि जब शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को शिक्षा प्रक्रिया में पहचाना जाता है, तो वे शैक्षिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करते हैं (बिलिंगस , 1995)। सीआरटी शैक्षिकों को शिक्षार्थियों के वास्तविक अनुभवों, भाषाओं, और सांस्कृतिक प्रथाओं को सीखने के उपकरण के रूप में इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे शिक्षार्थियों की संलिप्तता और प्रेरणा के स्तर में वृद्धि होती है (हममोनद, 2015)। यूजीसी (2022) के "नवाचारी शैक्षिक दृष्टिकोण और मूल्यांकन सुधारों के लिए दिशा-निर्देश" में सक्रिय शिक्षण रणनीतियों जैसे केस-आधारित शिक्षण, समूह परियोजनाएँ, और समस्या-समाधान कार्यों की अनुशंसा की गई है। ये रणनीतियाँ सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण सिद्धांतों के साथ मेल खाती हैं, क्योंकि ये शिक्षार्थियों को कक्षा सामग्री को उनके वास्तविक जीवन के अनुभवों से जोड़ने की अनुमति देती हैं *(नवाचारी शैक्षिक दृष्टिकोण और मूल्यांकन सुधारों के लिए दिशा-निर्देश; यूजीसी, 2022, पृष्ठ 22-25)*।

सामाजिक न्याय और समानता को बढ़ावा देना

सीआरटी शिक्षा में ऐतिहासिक असमानताओं को संबोधित करने का अवसर प्रदान करता है, जो हाशिए समुदायों के बारे में दोष-आधारित कथाओं को चुनौती देकर और सांस्कृतिक रूप से सकारात्मक प्रथाओं को बढ़ावा देता हैं (सलीटेर, 2011)। उच्च शिक्षा संस्थान सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, जो हाशिए समूहों के शिक्षार्थियों को सक्षम और योग्य शिक्षार्थियों के रूप में देखने का अवसर प्रदान करते हैं (हॉवर्ड, 2019)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ), 2022 शिक्षा में समानता-केंद्रित शिक्षण रणनीतियों की सिफारिश करती है, जो शिक्षार्थियों के विविध सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों का सम्मान करती हैं। यह दृष्टिकोण समावेशी शिक्षा को प्रोत्साहित करता है और शिक्षार्थियों की अद्वितीय आवश्यकताओं और अनुभवों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण प्रक्रिया को डिज़ाइन करने पर बल देता है। (एनसीएफ, 2022, पृष्ठ 35-38)।

समीक्षात्मक सोच और वैश्विक क्षमता का विकास

सीआरटी शिक्षार्थियों को सामाजिक मुद्दों को सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रोत्साहित करके समीक्षात्मक सोच कौशल विकसित करने में सहायता करता है (पेरिस और आलिम, 2017)। एक वैश्विक दुनिया में, उच्च शिक्षा को शिक्षार्थियों को अंतर-सांस्कृतिक इंटरएक्शन के लिए तैयार करना चाहिए, जिससे सीआरटी वैश्विक क्षमता और अंतर-सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक हो जाता है (बनक्स, 2016)।

सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षा को लागू करने में चुनौतियाँ

1. शिक्षक प्रशिक्षण और जागरूकता की कमी

सीआरटी को लागू करने में एक बड़ी चुनौती शिक्षक की तैयारी और जागरूकता की कमी है। कई शिक्षक सीआरटी के सिद्धांतों से अपरिचित होते हैं और उनके शिक्षण अभ्यासों में सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी रणनीतियों को एकीकृत करने के कौशल की कमी होती है (गे, 2002)।

NEP 2020 शिक्षकों के निरंतर पेशेवर विकास पर जोर देता है, जिसमें समावेशी शिक्षण प्रथाओं का प्रशिक्षण भी शामिल है, जो विविध सांस्कृतिक और भाषाई आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक हैं (अनुभाग 15.7)। सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र उन शिक्षकों पर निर्भर करता है जो सांस्कृतिक रूप से सक्षम होते हैं और जो अपने छात्रों की विविध आवश्यकताओं को पहचानने और उन्हें सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षण विधियों के माध्यम से संबोधित करने में सक्षम होते हैं(चौधरी और गोपाल, 2024; गे, 2010)।

यूजीसी दिशानिर्देश शिक्षक के विकास कार्यक्रमों के महत्व पर बल देते हैं ताकि शिक्षकों की क्षमता को नवाचारी और समावेशी शिक्षण विधियों के लिए बढ़ाया जा सके (नवाचारात्मक शिक्षण पद्धतियाँ एवं मूल्यांकन सुधार दिशानिर्देश, यूजीसी, 2022) हालांकि, सीआरटी पर केंद्रित संरचित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की कमी भारत में एक महत्वपूर्ण बाधा बनी हुई है (कुमार, 2021)। सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षा को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण, संस्थागत समर्थन, नीति सुधार और संसाधन विकास की आवश्यकता है (चौधरी और गोपाल, 2024; गे, 2010)।

संभावित समाधान:

- उच्च शिक्षा संस्थानों में सीआरटी पर नियमित कार्यशालाएँ और प्रमाणन पाठ्यक्रम शुरू किए जाएँ।
- शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में सीआरटी को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाए।

2. परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध

कई शिक्षक और संस्थान नए शिक्षण अभ्यासों को अपनाने में प्रतिरोधी हो सकते हैं, क्योंकि पारंपरिक मानसिकताएँ और कठोर शैक्षिक संरचनाएँ होती हैं (हॉवर्ड, 2019)। सीआरटी पुराने यूरोकेन्द्रिक पाठ्यक्रमों को चुनौती देता है और शिक्षकों को कक्षा में अपनी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के बारे में फिर से सोचने की आवश्यकता प्रदान करता है (सलीटेर, 2011)। ऐसे परिवर्तन, विशेष रूप से उन उच्च शिक्षा संस्थानों में जो पारंपरिक शैक्षिक पद्धतियों में गहरे रूप से निहित हैं, प्रतिरोध का सामना कर सकते हैं (बनक्स , 2016)।

संभावित समाधान:

- संस्थानों में संवेदनशीलता बढ़ाने के लिए संवाद सत्रों का आयोजन किया जाए।
- प्रशासनिक और नीति स्तर पर समर्थन बढ़ाने के लिए नीति निर्माताओं और शिक्षकों के बीच चर्चा हो।

3. सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण संसाधनों की कमी

सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण सामग्री की कमी एक महत्वपूर्ण चुनौती प्रस्तुत करती है। कई पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों में पश्चिमी दृष्टिकोण हावी होते हैं, जिससे शिक्षकों के लिए स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भों को अपने शिक्षण में एकीकृत करना कठिन हो जाता है (पेरिस, 2012)। एनसीएफ़ 2022 स्थानीयकृत और संदर्भित पाठ्यक्रमों की मांग करता है, जो क्षेत्रीय भाषाओं, परंपराओं और इतिहास को दर्शाते हैं, लेकिन ऐसे संसाधनों को विकसित करना समय, वित्तीय सहायता और संस्थागत समर्थन की आवश्यकता होती है।

संभावित समाधान:

- शिक्षकों को स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भों पर आधारित शिक्षण सामग्री तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

- क्षेत्रीय भाषाओं, परंपराओं और इतिहास को दर्शाने वाले डिजिटल संसाधनों और ओपन-एक्सेस कंटेंट का विकास किया जाए।

4. **मूल्यांकन और परीक्षण चुनौतियाँ**

सीआरटी को लागू करने के लिए पारंपरिक मूल्यांकन विधियों की पुन: मूल्यांकन की आवश्यकता होती है, जो अक्सर मानकीकृत और सांस्कृतिक रूप से पक्षपाती होती हैं (हममोनद , 2015)। सीआरटी शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों और सीखने की शैलियों पर विचार करते हुए अधिक समग्र और लचीले मूल्यांकन की आवश्यकता को उजागर करता है (गे , 2018)। यूजीसी दिशानिर्देश (2022) मानकीकृत परीक्षा से अधिक विविध मूल्यांकन प्रारूपों जैसे पोर्टफोलियो, परियोजनाओं और चिंतनात्मक निबंधों के लिए स्थानांतरित होने का सुझाव देते हैं, लेकिन इन सुधारों को बड़े संस्थानों में लागू करना सीमित संसाधनों के साथ चुनौतीपूर्ण हो सकता है (यूजीसी , 2022 पृष्ठ 31- 32, खंड 14)।

संभावित समाधान:

- संस्थानों में बहुस्तरीय मूल्यांकन पद्धतियों को अपनाने पर बल दिया जाए।
- मूल्यांकन विधियों को अधिक समावेशी और बहुसांस्कृतिक बनाने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाए।

5. **संस्थागत प्रतिबंध और नीति अंतराल**

एनईपी 2020 जैसे नीति प्रयासों के बावजूद, संस्थागत प्रतिबंध और नीति अंतराल सीआरटी को उच्च शिक्षा में लागू करने में बाधा डालते हैं। कठोर संस्थागत नीतियाँ, निधियों की कमी और प्रशासनिक समर्थन का अभाव शिक्षकों को सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी प्रथाओं को अपनाने में कठिनाई प्रदान करता है (बनक्स & बनक्स, 2019)। इसके अतिरिक्त, नीति निर्माताओं को यह स्पष्ट मार्गदर्शन प्रदान करने की आवश्यकता है कि सीआरटी सिद्धांतों को कक्षा अभ्यासों में कैसे अनुवादित किया जाए (कुमार, 2021)।

संभावित समाधान:

- सीआरटी-समर्थित शिक्षण कार्यक्रमों के लिए नीति निर्माण और वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
- उच्च शिक्षा संस्थानों में सीआरटी की प्रभावशीलता पर शोध को बढ़ावा दिया जाए।

6. **भाषा और बहुभाषावाद**

भाषा विविधता भारतीय उच्च शिक्षा में एक अवसर और चुनौती दोनों है। जबकि बहुभाषावाद शिक्षार्थियों को अपनी मातृभाषाओं में व्यक्त करने की अनुमति देकर सीखने को बढ़ावा दे सकता है, यह कई भाषाओं में समावेशी शिक्षण सामग्री बनाने में व्यावहारिक चुनौतियाँ उत्पन्न करता है (हममोनद, 2015)। एनईपी 2020 बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देने की वकालत करता है (एनईपी 2020; पृष्ठ 7 और अनुभाग 4.11), लेकिन उच्च शिक्षा में इस नीति को लागू करना महत्वपूर्ण संसाधन आवंटन की आवश्यकता है।

संभावित समाधान:

- स्थानीय भाषाओं में शिक्षण सामग्री विकसित करने के लिए डिजिटल तकनीकों का उपयोग किया जाए।
- बहुभाषी शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए द्विभाषी शिक्षण मॉडल अपनाए जाएँ।

पिरामिड: सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षा (सीआरटी) लागू करने की प्रक्रिया

नीचे दिए गए पिरामिड भारतीय संदर्भ में उच्च शिक्षा में सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षा (सीआरटी) लागू करने के महत्वपूर्ण कदमों को दर्शाता है।

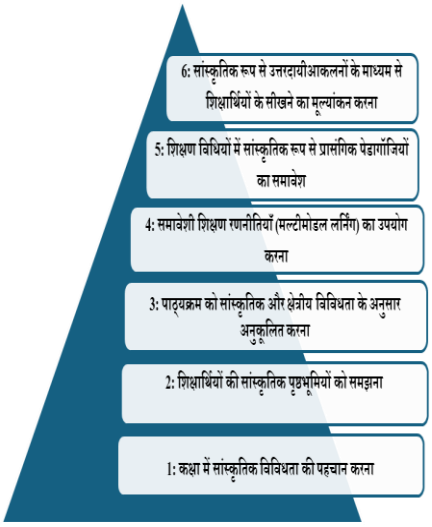

कदम 1: कक्षा में सांस्कृतिक विविधता की पहचान करना - पहला कदम शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों को पहचानना है। इसमें शिक्षार्थियों की जातीय, भाषाई और सामाजिक पहचान को समझना और यह देखना शामिल है कि ये कैसे उनके सीखने पर प्रभाव डालती हैं। भारतीय संदर्भ में, कक्षाओं में विभिन्न जातियों, जनजातियों और भाषाई अल्पसंख्यकों के शिक्षार्थी हो सकते हैं। शिक्षकों को प्रत्येक शिक्षार्थी द्वारा लाई गई सांस्कृतिक पूंजी का मूल्यांकन करना होगा और क्षेत्रीय भाषाओं, परंपराओं और मूल्यों को ध्यान में रखना होगा।

गतिविधियाँ:

•शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के बारे में जानने के लिए सर्वेक्षण करें।

• समूह चर्चा आयोजित करें जहाँ शिक्षार्थी अपनी सांस्कृतिक अनुभवों को साझा करें।

कदम 2: शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों को समझना - शिक्षार्थियों के सांस्कृतिक संदर्भ को समझने में जाति, धर्म, भाषा, लिंग और क्षेत्रीय रीति-रिवाजों का शिक्षार्थियों की दृष्टिकोणों पर प्रभाव जानना शामिल है। भारत में, शिक्षकों को विशेष रूप से अनुसूचित जातियाँ (SCs), अनुसूचित जनजातियाँ (STs) और अन्य पिछड़ी जातियाँ (OBCs) के संदर्भ में संवेदनशील होना चाहिए।

गतिविधियाँ:

• व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करने के लिए कहानी सुनाने का उपयोग करें।

• भारत में विभिन्न सांस्कृतिक प्रथाओं पर केस अध्ययन शामिल करें।

कदम 3: पाठ्यक्रम को सांस्कृतिक और क्षेत्रीय विविधता के अनुसार अनुकूलित करना - एक सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों की विविध पहचान को दर्शाता है। भारत में, इसका मतलब है स्थानीय भाषाओं, इतिहासों और सांस्कृतिक कथाओं को पाठ्यक्रम में शामिल करना। पाठ्यक्रम को सभी समुदायों की सांस्कृतिक संपत्ति का उत्सव मनाना चाहिए, विशेष रूप से उन समुदायों का जो ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रहे हैं।

गतिविधियाँ:
•पाठों में क्षेत्रीय साहित्य और ऐतिहासिक कथाओं को शामिल करें।

• प्रमुख अवधारणाओं को पढ़ाने के लिए स्थानीय उदाहरणों और केस अध्ययन का उपयोग करें।

कदम 4: समावेशी शिक्षण रणनीतियाँ (मल्टीमोडल लर्निंग) का उपयोग करना - समावेशी शिक्षण रणनीतियाँ विभिन्न सीखने की शैलियों के अनुरूप कई विधियों का उपयोग करती हैं। भारतीय संदर्भ में, इसमें शिक्षण उपकरण के रूप में कहानी सुनाने, संगीत, पारंपरिक कला रूपों और क्षेत्रीय शिल्प का समावेश हो सकता है। मल्टीमोडल लर्निंग सामग्री को सभी शिक्षार्थियों के लिए अधिक सुलभ बनाती है।

गतिविधियाँ:
• अवधारणाओं को सिखाने के लिए क्षेत्रीय मुहावरे और लोक कथाओं का उपयोग करें।

• दृश्य सहायक, वीडियो और इंटरएक्टिव लर्निंग उपकरण शामिल करें।

कदम 5: शिक्षण विधियों में सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी पेडागॉजियों का समावेश- सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी पेडागॉजी शिक्षार्थियों के सांस्कृतिक अनुभवों को सीखने के संसाधन के रूप में महत्व देती है। भारतीय शिक्षक को शिक्षार्थियों की मातृ भाषाओं, अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों को शिक्षण में महत्व देना चाहिए। उदाहरण स्वरूप, त्योहारों या परंपराओं को पाठों में शामिल करना शिक्षार्थियों की भागीदारी और सांस्कृतिक पहचान के प्रति सम्मान को बढ़ावा देता है।

गतिविधियाँ:
• महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आयोजनों (जैसे पोंगल, ईद, दीवाली) के चारों ओर पाठ योजना बनाएं।

• शिक्षार्थियों को अपने समुदाय की विशिष्ट परंपराओं को प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करें।

कदम 6: सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी आकलनों के माध्यम से शिक्षार्थियों के सीखने का मूल्यांकन करना- आकलन को शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए और किसी भी प्रकार की पक्षपातीता से बचना चाहिए। भारत में, पारंपरिक परीक्षाएँ हमेशा शिक्षार्थियों की क्षमताओं को सही ढंग से प्रतिबिंबित नहीं करती हैं, विशेष रूप से पहले पीढ़ी के शिक्षार्थियों के लिए। सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील आकलन में मौखिक कहानी सुनाना, समूह परियोजनाएँ और समुदाय-आधारित कार्य शामिल हैं।

गतिविधियाँ:
• शिक्षार्थियों की प्रगति को कैप्चर करने के लिए पोर्टफोलियो आकलन का उपयोग करें।

• ऐसे आकलन आयोजित करें जो शिक्षार्थियों से उनके सांस्कृतिक संदर्भ में ज्ञान लागू करने की आवश्यकता हो।

निष्कर्ष

सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षा एक शक्तिशाली दृष्टिकोण है जो एक समावेशी और समान शैक्षिक प्रणाली बनाने में सहायता करता है। शिक्षार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों को पाठ्यक्रम और शिक्षण रणनीतियों में एकीकृत करके, सीआरटी शैक्षिक सफलता, समीक्षात्मक सोच और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देता है। सीआरटी का एनईपी 2020, एनसीएफ़ 2022 और यूजीसी दिशानिर्देशों के साथ मेल खाने से भारतीय उच्च शिक्षा में इसके लागू होने के लिए एक मजबूत ढांचा प्रदान होता है। हालांकि चुनौतियाँ बनी हुई हैं, लेकिन सीआरटी द्वारा शिक्षा को रूपांतरित करने और एक अधिक समावेशी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने के अवसर विशाल हैं। हालाँकि चुनौतियाँ कई हैं, लेकिन सही रणनीतियों और नीतिगत हस्तक्षेपों के माध्यम से इनका समाधान किया जा सकता है। सीआरटी पर केंद्रित संरचित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की कमी भारत में एक महत्वपूर्ण बाधा बनी हुई है। सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षा को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण, संस्थागत समर्थन, नीति सुधार और संसाधन विकास की आवश्यकता है सीआरटी का प्रभावी कार्यान्वयन भारतीय उच्च शिक्षा को अधिक समावेशी, विविधतापूर्ण और नवाचार-उन्मुख बना सकता है।

- **बैंक्स, जे. ए., और बैंक्स, सी. ए. एम. (संपा.). (2004).** *बहुसांस्कृतिक शिक्षा पर शोध की मार्गदर्शिका* (2रा संस्करण). जोसी-बास.
- **चौधरी, एस., और गोपाल, पी. (2024).** कक्षा में पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र का मार्गदर्शन. *लाइब्रेरी प्रोग्रेस इंटरनेशनल, 44*(3), 25259-25270।
- **गे, जी. (2000).** सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण: सिद्धांत, अनुसंधान, और अभ्यास. *टीचर्स कॉलेज प्रेस.*
- **नायक, एस., & रंजन, पी. (2019)**. भारत में शैक्षिक समानता के लिए सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र की संभावनाएँ। *भारतीय शिक्षा अध्ययन जर्नल, 27*(2), 40-52।
- **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी). (2022)**. नवाचारी शैक्षिक दृष्टिकोण और मूल्यांकन सुधारों के लिए दिशा-निर्देश. नई दिल्ली: यूजीसी प्रकाशन।
- **राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी). (2022).** राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ). नई दिल्ली: एनसीईआरटी प्रकाशन।
- **लैडसन-बिलिंग्स, जी. (1995).** सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक शिक्षाशास्त्र के सिद्धांत की ओर। *अमेरिकन एजुकेशनल रिसर्च जर्नल, 32*(3), 465–491। https://doi.org/10.3102/00028312032003465
- **राव, एम. (2015).** भारतीय उच्च शिक्षा में सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण का प्रभाव। *उच्च शिक्षा अनुसंधान जर्नल, 18*(3), 85-94।

- **साहा, आर. (2018).** भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली में सांस्कृतिक विविधता को समाहित करने की आवश्यकता। *शैक्षिक नीति और अनुसंधान जर्नल, 22*(1), 112-128।
- **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) दिशानिर्देश (2020**). भारतीय उच्च शिक्षा में समावेशी और बहुसांस्कृतिक शिक्षण को प्रोत्साहित करने हेतु नीति। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारत। https://www.ugc.ac.in
- **बैंक्स, जे. ए., और बैंक्स, सी. ए. एम. (2019)।** बहुसांस्कृतिक शिक्षा: मुद्दे और दृष्टिकोण (10वां संस्करण)। वाइली।
- **बैंक्स, जे. ए. (2016).** सांस्कृतिक विविधता और शिक्षा: आधार, पाठ्यक्रम और शिक्षण (6वां संस्करण)। रूटलेज।
- **बैसी, एम. ओ. (2016).** सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण: शैक्षिक न्याय के लिए निहितार्थ। *शैक्षिक नींव, 30*(1-4), 49-64।
- **क्लार्क, आर. (2023).** माध्यमिक शिक्षा में सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण: चुनौतियाँ और समाधान। *शैक्षिक अनुसंधान और अभ्यास जर्नल, 17*(2), 211-230।
- **गे, जी. (2002).** सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण के लिए तैयारी। *शिक्षक शिक्षा जर्नल, 53*(2), 106-116। https://doi.org/10.1177/0022487102053002003
- **गे, जी. (2010).** सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण: सिद्धांत, अनुसंधान और अभ्यास (2रा संस्करण)। टीचर्स कॉलेज प्रेस।
- **गे, जी. (2018).** सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण: सिद्धांत, अनुसंधान और अभ्यास (3रा संस्करण)। टीचर्स कॉलेज प्रेस।
- **गीयरहार्ट, एम. (2019).** समावेशी शिक्षण पद्धतियाँ और सांस्कृतिक उत्तरदायित्व की भूमिका। *शिक्षण और शिक्षक शिक्षा, 25*(4), 78-93।
- **हैममोंड, ज़. (2015).** सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण और मस्तिष्क: सांस्कृतिक और भाषाई रूप से विविध छात्रों के बीच प्रामाणिक संलग्नता और कठोरता को बढ़ावा देना। कॉरविन प्रेस।
- **हॉवर्ड, टी. सी. (2019).** स्कूलों में नस्ल और संस्कृति क्यों मायने रखते हैं: अमेरिका की कक्षाओं में उपलब्धि अंतर को बंद करना। टीचर्स कॉलेज प्रेस।
- **हॉयट, सी., हंट, टी., और लवेट, ए. (2022).** शिक्षा में समानता और समावेशन: एक सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी दृष्टिकोण। *समानता और उत्कृष्टता शिक्षा में, 55*(1), 10-28।
- **कुमार, ए. (2019).** भारतीय शिक्षा में स्वदेशी ज्ञान का एकीकरण: एक सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी दृष्टिकोण। *अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक अध्ययन जर्नल, 14*(2), 97-112।
- **मॉल, डी., अमंती, सी., नेफ, डी., और गोंजालेज, एन. (1992).** शिक्षण के लिए ज्ञान के स्रोत: घरों और कक्षाओं को जोड़ने के लिए एक गुणात्मक दृष्टिकोण का उपयोग। *सिद्धांत से अभ्यास, 31*(2), 132-141।
- **मुनीज़, जे. (2019).** सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण: 21वीं सदी का दृष्टिकोण। *शैक्षिक नेतृत्व, 76*(5), 14-20।
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020.** शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। https://www.education.gov.in/nep2020
- **पेरिस, डी. (2012).** सांस्कृतिक रूप से सतत शिक्षाशास्त्र: दृष्टिकोण, शब्दावली और अभ्यास में आवश्यक परिवर्तन। *शैक्षिक अनुसंधानकर्ता, 41*(3), 93-97।
- **पाशा, एस. (2012).** बहुसांस्कृतिक भारत में सामाजिक न्याय और शिक्षा। *अंतर्राष्ट्रीय बहुसांस्कृतिक शिक्षा जर्नल, 14*(1), 21-38।
- **पेड्रोसो, आर., सासाना, डी., और वेलेंसिया, जे. (2023).** शिक्षकों के दृष्टिकोण सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र को लागू करने पर। *बहुसांस्कृतिक शिक्षा जर्नल, 28*(1), 33-52।
- **सलीटेर, एम. (2011).** सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण के माध्यम से समानतापूर्ण शिक्षा। *शिक्षा में सामाजिक न्याय जर्नल, 6*(4), 55-72।
- **शर्मा, आर., और गुप्ता, एम. (2018).** भारतीय शिक्षा में स्थानीय परंपराओं की भूमिका: एक समावेशी दृष्टिकोण। *भारतीय शिक्षा और समाज जर्नल, 12*(3), 77-89।
- **सिंह, व. (2022).** माध्यमिक विद्यालयों में बहुसांस्कृतिक शिक्षा: नीतियाँ और प्रथाएँ। *अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा नीति जर्नल, 20*(1), 121-138।
- **सिंह, श. प. (2022).** छात्रों की सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र के प्रति धारणाएँ. *वॉयस ऑफ़ टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी)*, 1-15
- **राजगोपाल, के. (2011**). क्रीऐट सक्सेस ! अनलोककिनग द पॉटेंटीयल आफ अर्बन स्टूडेंट्स. एसोसिएशन फॉर सुपरविजन एंड करिकुलम डेवलपमेंट।